डॉ. बिभा कुमारी

हिंदी विभाग, विश्वेश्वर सिंह जनता महाविद्यालय, राजनगर, मधुबनी

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

बीए हिंदी प्रतिष्ठा, तृतीय वर्ष, पत्र – अष्टम

काव्य में बिम्ब

बिम्ब अंग्रेज़ी के 'इमेज' (image) शब्द का पर्यायवाची है। इमेज का अभिप्राय अमूर्त को मूर्त करने से है। अमूर्त, अस्पष्ट और अप्रकट को मूर्त कर देना, चित्र उपस्थित कर देना, मूर्तिमान कर देना बिम्ब – विधान कहलाता है। किसी विषय, वस्तु, भाव से मिलती – जुलती किसी वस्तु को इस तरह से प्रस्तुत किया जाता है कि श्रोता – पाठक आदि के समक्ष वह साक्षात रूप में उपस्थित हो जाए। इस प्रकार से अमूर्त को मूर्त कर देने की कला को साहित्य में बिम्ब कहते हैं। बिम्ब को मानस चित्र भी कहा जाता है।

काव्य में बिम्ब का स्थान बहुत महत्वपूर्ण है। एक तरह से देखा जाय तो बिम्ब से ही काव्य गढ़ा जाता है। कवि के भाव अमूर्त होते हैं। उसको अभिव्यक्ति देने के क्रम में कवि बिम्ब प्रस्तुत करता है। अर्थात बिम्ब एक महत्वपूर्ण माध्यम है जिसके द्वारा कवि हृदयगत भावों तथा विचारों को मूर्त एवं स्पष्ट रूप में चित्रित करने में समर्थ होता है। भारतीय काव्यशास्त्र में बिम्ब का एक पृथक काव्य तत्व के रूप में विवेचन प्रायः नहीं किया गया है। रूपक आदि सादृश्यमूलक अलंकारों के अंतर्गत इसे भी अंतर्भुक्त कर लिया गया है। पाश्चात्य काव्यशास्त्र में बिम्ब को काव्य के अनिवार्यतम अंग के रूप में प्रतिष्ठा मिली है। आर. एल. ब्रेट के अनुसार –

"अधिकांश दूसरे शब्दों की तरह बिम्ब एवं बिम्ब – विधान जैसे शब्दों का भी अनेक अर्थों में प्रयोग किया जाता है। आज सामान्यतया इनका अभिप्राय भाषा के ऐसे प्रयोग से है जो अमूर्तताओं की बजाय मूर्त विशिष्टताओं पर निर्भर होता है।"

(Like most other words image and imagery bears a wide range of meaning. Today they generally refer to any use of language which depends on concrete particulars rather than abstractions.)

अर्थात भाषा का ऐसा प्रयोग जो विचारों एवं भावों को अमूर्त रूप में वर्णित न करके मूर्त एवं इन्द्रियसंवेद्य रूप में प्रस्तुत करता है, बिम्बप्रधान प्रयोग कहलाता है। बिम्ब का प्रयोग मुख्यतः काव्य में किया जाता है। भाव की सघनता के कारण काव्य में बिम्ब की प्रमुखता होती है। अनेक मुहावरों में बिम्ब का प्रयोग किया जाता है।

प्रसिद्ध समीक्षक टी. ई.हुल्मे ने इसी दृष्टि से कहा है-

"बिम्ब काव्य में अलंकरण के साधन मात्र नहीं हैं, अपितु वे तो भावात्मक भाषा के सारतत्व हैं।"

(Image in verse are not mere decoration but the very essence of an intuitive language.)

जब भी भाव, संवेग या आत्मानुभूति की प्रधानता होती है भाषा का बिम्ब प्रधान होना अनिवार्य हो जाता है। काव्य में सौंदर्य जिन कारणों से आता है, उनमें बिम्ब सर्वप्रमुख है।

आत्मा के स्तर पर विचार, भाव, अनुभूतियां अमूर्त रहती हैं, बिम्ब के माध्यम से उसे आकार प्रदान किया जाता है। बिम्ब की सहायता से कवि अपने विचारों को इस प्रकार प्रस्तुत करता है कि पाठकों – श्रोताओं को आश्चर्य और आनंद की अनुभूति होती है।

बिम्ब – विधान का संबंध ऐन्द्रिय अनुभूति से होता है इसलिए पाठकों – श्रोताओं पर इसका गहरा प्रभाव पड़ता है। बिम्ब का संबंध प्रायः दृश्य से ही माना जाता है, परंतु बिम्ब का दायरा अत्यंत विस्तृत है। मनोवैज्ञानिकों ने भी यह स्वीकार किया है कि बिम्ब का संबंध केवल दृश्य मात्र से ही नहीं है बल्कि यह सभी इंद्रियों की अनुभूति के विषय बन सकते हैं। तुलसीदास की पंक्ति "कंकन किंकिनि नूपुर धुनि सुनि" श्रव्य बिम्ब का अत्यंत सुंदर उदाहरण है।

बिम्ब के प्रभाव तथा उसकी इन्द्रियगम्यता के आधार पर बिम्बों को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है –

1.ऐन्द्रिय बिम्ब 2. मानस बिम्ब

ऐन्द्रिय बिम्ब के भेद हैं –

दृश्य बिम्ब, श्रवण बिम्ब, घ्राण बिम्ब, आस्वाद बिम्ब, स्पर्श बिम्ब, गति बिम्ब, क्रिया बिम्ब आदि।

मानस बिम्ब के भेद हैं –

भाव बिम्ब तथा विचार बिम्ब।